

७

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

५३६१ पद (६)

ग्रंथ नाम

कपिल स्तुति

विषय

मराठी काव्य.

॥ श्रीजातलब्धकुटिलककुंगमाका ॥ श्री  
॥ निमयुगमकरीजावदंनोबुजाता ॥ श्री  
॥ मुखज्वनयनाज्वयुगं करोनी ॥ शोभेज  
॥ लखकसरोरुमाहरोनि ॥ ११ ॥ ध्यावेवि  
॥ शेषे अवलोकनलोचनाचे ॥ तापत्रया  
॥ निव विजेभवमोचनाचे ॥ सस्नेह जात  
॥ अतिसुदरहां स्यमंद ॥ प्रेमे प्रसादश  
॥ भुज्यात दिसें अमंद ॥ १२ ॥ रोगविज  
॥ सेभवशेष समुद्रवारी ॥ हांसे असापर  
॥ समुद्रदान वारि ॥ कीडां करि मुनि  
॥ मनांतरिघोन काम ॥ मंड विमुक्तवि  
॥ त्यासंदिपुर्ण कामा ॥ १३ ॥ ध्यानासना  
॥ अयुजसे जतिहां स्यदेवे ॥ केले जसे  
॥ ईतर नाठ विजे सदेवे ॥ आरु दंत ३४  
धराभुजते जयाते ॥ ध्याया असा रम  
ताविष्णु पदां जयाते ॥ १४ ॥ सपी  
अदया हरि विद्या जहा निषा  
अमे मडा उठति सात्विक अष्टकावे  
तो आठवी हरि हिमान सहस्ररु  
पी ॥ १५ ॥ ध्यामन बुद्धि निज वि  
रूप ॥ १५ ॥ हे ध्यान वदति पदुदरी  
रुन माळा ॥ पाई स मर्पित त्यापु  
रुषोत्तमा ॥ पद्या सि पद्याचि  
निघे मुखि वामनोच्या ॥ वृत्ती ३ असो  
निहरी रूप मये मनाच्या ॥ १६  
पदपदाव ॥ ध्याना कपि रुसु ॥ १७  
मा ॥

॥ चेतारि रिगरुदाह निवेजवला ॥  
॥ माथापर नीशिवतो शिव निरजाला ॥  
॥ ध्यावे उसे स्मरत त्या पद निरज्याला ॥  
॥ मा डिवरि चरण सुदर पाद पद्मा ॥ पासु  
॥ नी जानुवरी टेउ निनीत्य पद्मा ॥ प्रिती  
॥ करु निचुरी ते जननी जनाची ॥ माता  
॥ वीधी की वधु जेम वभं जनाचि ॥ १८ ॥ ज्या मा  
॥ डिया खग म्हावरी वर्तमाना ॥ ज्या सावल्या  
॥ अतसी काकु सुमा समाना ॥ पीता वराव  
॥ रिवाटी अतीर म्हाकाची ॥ पीकी जीला  
॥ मणी मया लघु दंठिकाची ॥ १९ ॥ निहदिक  
॥ मळपुत्र विरचि ज्योते ॥ त्रेलोक्य उद्वज ज्योत  
॥ गहं बुजति ॥ विस्तिर्ण उर न रयो वनमावदा  
॥ वि ॥ पां विस्तिर्ण उगवत्या अमि भावदा वि ॥  
॥ श्रुत हृत्क मळ त्या भव मोचनाचे ॥ जे दे म  
॥ नाम सुख वा ऊंचिलोचनाचे ॥ ध्यावे चरा  
॥ वरन मस्तक वंदे राते ॥ जो को सुभा ॥ धिर  
॥ वि तो अति सुंदराते ॥ २० ॥ जि मंदिर मयि  
॥ त्रिधा वृद्धिते ॥ ध्यावे तया सकळ विरर  
॥ सुखा वृद्धिते ॥ धारा हा हा वात सुदर्शन  
॥ चक हाती ॥ पद्मात हंस करि राख आसा  
॥ पाहाती ॥ २१ ॥ को मोदकी प्रिय गदा स्मर  
॥ अंतरंगे ॥ जे मा खलि असुर मर्द निरक्त  
॥ रंगे ॥ गुं जांवे कर निशे वि ति म्हा मा  
॥ २२ ॥ कं टिम पि जिव वि जो स्थिर अंग  
॥ ताळा ॥ २३ ॥ जाला स्वमृत्य करणे चकरनी  
॥ पी ॥ त्याचे मुख ज्व सुख कोणी जगीनि  
॥ पि ॥ गंडस्थले मकर कुडल मोलिका  
॥ पि ॥ डोले प्रभा सरवता अति नासी  
॥ को चि ॥ २४ ॥

॥ पाही येले तेहे यशोदेसी छांती ॥ लेके परी  
 ॥ क्षीती मे मतीचे ॥ १ ॥ खोडी न को करू ल  
 ॥ तुलसी दटावीले ॥ त्रपुनीरु सले ताने म  
 ॥ सि ॥ २ ॥ नंदा लागी त्रणे पाहु कोटे नं का  
 ॥ दाट लासे पा न्हासनी मात्या ॥ ३ ॥ लघु व  
 ॥ तेय वेळि करीत से खेद ॥ ये शोदे सावध हो  
 ॥ ई माते ॥ ४ ॥ दुष्ट मी पापीणी बाघी ले उरव का  
 ॥ सी ॥ त्रणे नीरु सला सी देव राया ॥ ५ ॥  
 ॥ माती खाते वेळे तुज सी मारी ले त्रणे नीरा  
 ॥ कीले म जल गी ॥ ६ ॥ ना मा त्रणे त्याचे क  
 ॥ री समाधान ॥ सागे ब्रह्म ज्ञान हो या ज्ञाना  
 ॥ प्रपन्नः काळो उध्यव वना सी लीला ॥ मित्र  
 ॥ लासे मेळ गोपी का च्या ॥ ७ ॥ पासो त्रण तो  
 ॥ कोण आता जला ॥ न्यायानंद ला पाट  
 ॥ वीला ॥ ८ ॥ सकळा क प्राण देव नीय रंग  
 ॥ त्रणे नीतया सी पाट वीला ॥ ९ ॥ प्रमरा सी  
 ॥ स्त्री या कुशब्दे ताडी ती ॥ आवडी वीला  
 ॥ नाना शब्दे ॥ १० ॥ धावो नी धिरी उध्यव चर  
 ॥ ११ ॥ अमुचे स्मरण करीत से ॥ १२ ॥ खरु  
 ॥ ही न आली के सुंदर को सदा सी ॥ त्रणे ॥ उध्यव पापेय म न जल ये गुल गुल गुल म न राव वा ॥  
 ॥ नी तुज सी पुसत से ॥ ६ ॥ आत्मा साटी ते  
 ॥ ये जाउ नी या त्रणे ॥ येकादा चरण रावी  
 ॥ सर्वा ॥ ७ ॥ मे त्या त्या गोपी का त्या ची राव  
 ॥ जाती ॥ वाज वि मुरली त यावरी ॥ ८ ॥  
 ॥ ना मा त्रणे त्या स सा ग ल से ज्ञान ॥ ९ ॥  
 ॥ काचे क पेने र सी राव त्या ॥ १० ॥

॥ समस्ताचे त्याने केले समाधान ॥ सारी ले भोजन  
 ॥ सकळी की ॥ १ ॥ यशोदा भाणी नंद देती जवळ का  
 ॥ २ ॥ का पादी नावर आसा त्या की ॥ ३ ॥ गोपा व  
 ॥ गिर्वणी पुसत से उध्यव ॥ आसा त्या वा मा व  
 ॥ क का पाई ॥ आ आला सयुरे सी गोवर्त मा  
 ॥ न ॥ ना मा त्रणे धन्य श्रोते वृत्ते ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५  
 ॥ ६ ॥  
 ॥ सुखी क व मा त्र पुण्ये न ॥ प्रीतु पुण्य च र्चय ना ॥  
 ॥ अदार्प त्व वं र पुण्ये न ॥ स्व पुण्ये न समा य  
 ॥ ता ॥ १ ॥ उन्मत्तो मा त्र दोषेण ॥ प्रीतु दोषे  
 ॥ न सुखता ॥ अदत्त वं र दोषेण ॥ कर्म  
 ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥  
 ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥  
 ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥  
 ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥  
 ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥  
 ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥  
 ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥  
 ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥  
 ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥  
 ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com